International Journal of Applied Research 2018; 4(2): 255-256

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(2): 255-256
www.allresearchjournal.com
Received: 06-12-2017
Accepted: 16-01-2018

डॉ. नीता माथुर
एसोसिएट प्रोफेसर, विवेकानंदा कॉलेज, दिल्ली विश्विद्यालय, भारत

Corresponding Author:
डॉ. नीता माथुर
एसोसिएट प्रोफेसर, विवेकानंदा कॉलेज, दिल्ली विश्विद्यालय, भारत

विश्व संगीत मार्तण्ड पद्मभूषण आचार्य पं. गोकुलोत्सवजी महाराज

डॉ. नीता माथुर

प्रस्तावना

शास्त्रीय संगीत के बहुआयामी स्तम्भ, यशस्वी एवं मूर्धन्य गायक पद्मभूषण आचार्य पं. गोकुलोत्सवजी महाराज हमारे देश की एक ऐसी महान विभूति हैं जिनका व्यक्तित्व असाधारण, बहुमुखी और अनन्तगुण विभूषित है| आपने अपनी कठिन संगीत साधना और शास्त्रों के अनुशीलन से भारतीय संगीत, साहित्य एवं संस्कृति को गौरवान्वित किया है| गोकुलोत्सवजी के लिए संगीत मनोरजन नहीं, अपितु ईश्वरीय प्रेम की सुगंध लिए हुए दिव्य और अलौकिक अनुभूति है, एक महान विचार एवं दर्शन की धारा है |

आप स्वर को प्रभु की आराधना का सेतु मानने वाले गान योगी हैं | महाराजजी की संगीत यात्रा बहुत बाल्यावस्था से ही आरम्भ हुई| आपकी वंश परंपरा में वेद-वेदान्त, प्रबंध, छंद, सामगान, साहित्य, व्याकरण इन सब प्राचीन विधाओं के शिक्षण की परंपरा रही है | आपकी परंपरा मे सोमयज्ञ, जिसमे सामगान की पद्दति है, उसके अनुष्ठान की भी परंपरा है और आप इसके अधिकारी दीक्षित विद्वान हैं |[1] भारत में ही नहीं, अपितु लन्दन, अमरीका में भी महाराजजी ने इस यज्ञ का अनुष्ठान करके भारतीय संस्कृति का विदेशो में भी प्रचार किया है|

पं. गोकुलोत्सव जी महाप्रभु वल्लभाचार्य जी (1535 विक्रमी संवत) की पवित्र वंशावली में सत्रहवी पीढ़ी के जगद्गुरू आचार्य हैं | संगीत की प्रारंभिक शिक्षा आपको अपने पिताश्री आचार्य पं. गिरधर लाल जी महाराज से प्राप्त हुई और बाद मे पं. मोरेश्वरलाल गोलवलकर साहब से संगीत शिक्षा प्राप्त की | कई अप्रचलित राग आपने उनसे सीखे | इंदौर के उस्ताद अमीर खां साहब की गायकी से प्रभावित होकर आपने अपने गायन को अमीरखानी रंग दिया|

विभिन्न शास्त्रों के चिंतन, मनन, मंथन से आपने संस्कृत और हिंदी में कई ग्रंथो का लेखन किया है | 'मधुर पिया' उपनाम से महाराजजी ने पांच हजार से भी अधिक रचनाएँ, काव्य, छंद आदि की रचना की है जिनमे कई ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराने, प्रबंध, रागमालाएँ आदि हैं | इनमें संस्कृत, हिंदी के छंदों-मन्दाक्रान्ता, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, शिखरिणी, अष्टपदी, षट्पदी इत्यादि का प्रयोग हुआ है | राग, रस, साहित्य और संगीत सभी दृष्टि से ये रचनाएँ उच्चकोटि की हैं | ऐसे बहुत कम कलाकार हैं जो संगीतज्ञ वाग्गेयकार भी हों और शास्त्र के विद्वान् भी । आपकी बंदिशे (संगीत रचनाएं) कृष्णभक्ति और आध्यात्मिकता से अनुप्राणित हैं | आपने अपनी रचनाओं को इस प्रकार ढाला है कि उसमे वैष्णव को भक्ति रस, सिख को सुरत सन्दर्भ और सूफी को इश्के हबीबी की झलक मिलती है | (महाराजजी की कई स्वचरित बंदिशों को लेखिका द्वारा दो पुस्तकों के अंतर्गत स्वरलिपि बद्ध किया गया है) | पं. गोकुलोत्सवजी ने कई नवीन रागो की भी सर्जना की है – अद्भुदरंजनी, प्रसन्नपदा, मधुरमल्हार, स्नेह गंधार या दिव्य गंधार, भारत कल्याण इत्यादि |

महाराज जी प्रचलित रागों, तालों के अलावा अप्रचलित अछोप रागों - लच्छासाख, भाव साख, ककुभ, मलुहा, जिलफ, हेम कामोद, खट इत्यादि में, तालों में - चक्र, मत्त, मंठ, गणेश, शिखर, ब्रहम, रुद्रताल इत्यादि में गायन बहुत सहजता पूर्वक करते हैं, जो आपके अद्भुद दिव्य व्यक्तित्व का परिचायक है | इस प्रकार सात स्वरों का महासागर आपकी गायकी की गागर में भरा हुआ है | आपका मानना है, "सुर का साम्राज्य सब दूर है | गायक या वादक सर्वप्रथम सुर की परंपरा में है | ईश्वर की परंपरा में है और वही उसका हिन्दुस्तानी घराना है |"

महाराजजी की गायन शैली में उन सभी तत्वों का समावेश है जो भारतीय संगीत की सनातन शास्त्रीय परंपरा और वैदिक सामगान पद्दति मे विद्यमान है| आपने अगाध निष्ठा, समर्पण और कठिन तपस्या से ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, प्राचीन प्रबन्धादि, सामगान, पुष्टिमार्गीय पद गान तथा अन्य कई दुर्लभ और प्राचीन विधाओं में दक्षता प्राप्त की है | पं. गोकुलोत्सवजी की गायन शैली में उन सभी तत्वों का समावेश है जो भारतीय संगीत की सनातन शास्त्रीय परंपरा और वैदिक सामगान पद्धति में विद्यमान है | आपने अपने मौलिक चिंतन, अभिनव संगीत दृष्टि और सृजनात्मक प्रतिभा से अपनी गायकी को नवीन आयाम और नूतन दिशा दी है| आपकी गायकी में जहां ध्रुपद की दृढ़ता, गाम्भीर्य और ओजस्विता है, वही ख्याल गायकी में विविधता, रसात्मकता, रंजकता, माधुर्य एव भावप्रवणता है |

पं. गोकुलोत्सव महाराज जी ने भारतीय दर्शन, स्वास्थ्य, योग, ज्योतिष और संगीत के पारस्परिक अन्तर्सम्बंध को स्थापित करते हुए देश-विदेश में इनका निःशुल्क और सफल प्रयोग किया है | आपका मानना है "शास्त्रीय संगीत नाद साधना और प्राण योग का सनातन स्रोत है | बारह स्वर, बारह राशियों को प्रभावित करते हैं | स्वरों के ध्वनि स्पंदन से आशातीत लाभ मिले हैं | सात स्वर सप्त लोकों के प्रतीक हैं, यूनीवर्सल कीज़ (Keys) हैं जिनसे शरीर के छः चक्र खुलकर सातवां चक्र आत्म चक्र का पोषण होता है | संगीत संस्कृति का सर्वोच्च मानदंड है" |[2] आपका मानना है कि नियमित गाने से आप पाएंगे कि आप सबसे ज्यादा स्वस्थ हैं, फिट हैं | इसे हम प्राणायाम, अनिलायाम कहते हैं | गायन से वह सहज सिद्ध हो जाता है, प्रयत्न नहीं करना पड़ता | संगीत परमात्मा की समृद्धि भरी सौगात है |[3]

महाराज जी की जीवनव्यापिनी संगीत सेवाओं एवं योगदान के लिए भारत सरकार ने पद्मश्री, पद्मभूषण, राष्ट्रीय तानसेन अवॉर्ड से सम्मानित किया है | इनके अतिरिक्त आपको विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओ ने विभिन्न अलंकरण एवं उपाधियों से सम्मानित किया है | विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने आपको 'डी. लिट्' (डॉक्टर ऑफ लिट्रेचर) की मानद उपाधि ससम्मान प्रदान की |

संगीत की सनातन पद्धति का अनुशीलन करते हुए उसके शास्त्रीय तत्वों से किसी तरह का समझौता न करते हुए आपने सदैव भारतीय संगीत की शुचिता एवं शुद्धता को बरकरार रखा है | आपके विलक्षण व्यक्तित्व और शास्त्रीय संगीत में अतुलनीय योगदान के लिए देश के सर्वोच्च श्रेणी के संगीतज्ञ कलाकारों भारतरत्न पं. रविशंकर, भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी, पं. जसराज, पं. रामनारायण, उ. विलायत खां, उ. अमीनुद्दीन खां डागर आदि ने उन्मुक्त कंठ से आपकी भूरिः भूरिः प्रशंसा की है[4] |

संदर्भ

1. 'सोमयज्ञ की पुनीत परम्परा' श्रीविराट वाजपेय सोमयाग महोत्सव, ग्वालियर, स्मारिका, 2000, पृष्ठ - 39.
2. 'ब्रह्मांड में तरंगित है स्वर सागर', दैनिक भास्कर, इन्दौर, 23 अक्टूबर, 2008 पं. गोकुलोत्सव जी के विचार.
3. 'फ्यूजन के पीछे है कन्फ्यूज़न', नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली. 17 जुलाई, 2010 में प्रकाशित महाराज जी के इन्टरव्यू से उद्धृत
4. पं. गोकुलोत्सव जी से व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर सूचना संकलन